

# डॉ. राम मनोहर लोहिया का लोकसभा सदस्य के रूप में देश व नागरिकों के प्रति चिंतन

Dr. Pooja Kiran\*

Lecturer (History), Govt. Girls Inter College, Kundarki, Moradabad

सार - डॉ लोहिया मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के प्रबल पक्षधर थे। डॉ लोहिया देश और विदेश भ्रमण के द्वारा यह तथ्य का भलीभाँति विवेचन कर चुके थे कि किसी देश का विकास उसकी अपनी मातृभाषा के माध्यम से ही हो सकती है क्योंकि विश्व के तमाम देश अपनी मातृभाषा के माध्यम से आज संसार में अपना अग्रणी स्थान बनाये हुए हैं, जैसे जर्मनी, जापान, फ्रांस, चीन, रूस, सउदी अरब के देश आदि हैं। बालक मातृभाषा के माध्यम से अपने विचारों को अधिक स्पष्टता के साथ व्यक्त कर सकता है। मातृभाषा के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बनाये जाने की आवश्यकता व्यक्त की थी एवं महत्ता आज भी है और आगे भी रहेगी। डॉ राममनोहर लोहियासंसार में अलगाववाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद आदि समस्याओं के निराकरण के लिए विश्व नागरिकता का दृष्टिकोण पैदा करने के लिए शिक्षा का माध्यम सर्वोत्तम माना है। डॉ लोहिया का मानना था कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का मानसिक, बौद्धिक विकास करके मनुष्य के विचारों में संकीर्णता को मिटाकर व्यापकता पैदा करके विश्व नागरिकता का सपना साकार किया जा सकता है। विश्व नागरिकता भाव संसार में समरसता की भावना को जन्म देती है जिसे युद्ध, आतंक, कलह, क्षेत्रवाद आदि समस्यायें स्वतः समाप्त हो जाती हैं। आज का युग अलगाववाद और आतंकवाद का युग माना जा रहा है। जिसका समाधान विश्व एकता की भावना जागृत करके ही किया जा सकता है।

कुंजीशब्द – डॉ राम मनोहर लोहिया, लोकसभा सदस्य, देश, नागरिकों

-----X-----

## प्रस्तावना

## राममनोहर लोहिया

## आरम्भिक जीवन एवं शिक्षा

डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के अयोध्या जनपद में (वर्तमान-अम्बेडकर नगर जनपद) अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिताजी श्री हीरालाल पेशे से अध्यापक व हृदय से सच्चे राष्ट्रभक्त थे। ढाई वर्ष की आयु में ही उनकी माताजी (चन्दा देवी) का देहान्त हो गया। उन्हें दादी के अलावा सरयूदेई, (परिवार की नाईन) ने पाला। टंडन पाठशाला में चौथी तक पढ़ाई करने के बाद विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल में दाखिल हुए।

उनके पिताजी गाँधीजी के अनुयायी थे। जब वे गाँधीजी से मिलने जाते तो राम मनोहर को भी अपने साथ ले जाया करते थे। इसके कारण गाँधीजी के विराट व्यक्तित्व का उन पर गहरा असर हुआ।

पिताजी के साथ 1918 में अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए।

बंबई के मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाई की। लोकमान्य गंगाधर तिलक की मृत्यु के दिन विद्यालय के लड़कों के साथ 1920 में पहली अगस्त को हड़ताल की। गांधी जी की पुकार पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया। पिताजी को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आंदोलन के चलते सजा हुई। 1921 में फैजाबाद किसान आंदोलन के दौरान जवाहरलाल नेहरू से मुलाकात हुई। 1924 में प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस के गया अधिवेशन में शामिल हुए। 1925 में मैट्रिक की परीक्षा दी। कक्षा में 61 प्रतिशत नंबर लाकर प्रथम आए। इंटर की दो वर्ष की पढ़ाई बनारस के काशी विश्वविद्यालय में हुई। कॉलेज के दिनों से ही खर्द पहनना शुरू कर दिया। 1926 में पिताजी के साथ गौहाटी कांग्रेस अधिवेशन में गए। 1927 में इंटर पास किया तथा आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता जाकर ताराचंद दत्त स्ट्रीट पर स्थित पोद्दार छात्र हॉस्टल में रहने लगे। विद्यासागर कॉलेज में दाखिला लिया। अखिल बंग विद्यार्थी

परिषद के सम्मेलन में सुभाषचंद्र बोस के न पहुंचने पर उन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता की। 1928 में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में शामिल हुए। 1928 से अखिल भारतीय विद्यार्थी संगठन में सक्रिय हुए। साइमन कमिशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आंदोलन किया। कलकत्ता में युवकों के सम्मेलन में जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष तथा सुभाषचंद्र बोस और लोहिया विषय निर्वाचन समिति के सदस्य चुने गए। 1930 में द्वितीय श्रेणी में बीए की परीक्षा पास की।

### स्वदेश आगमन एवं स्वतंत्रता संग्राम

1933 में मद्रास पहुंचे। रास्ते में सामान जब्त कर लिया गया। तब समुद्री जहाज से उतरकर हिन्दु अखबार के दफ्तर पहुंचकर दो लेख लिखकर 25 रुपया प्राप्त कर कलकत्ता गए। कलकत्ता से बनारस जाकर मालवीय जी से मुलाकात की। उन्होंने रामेश्वर दास बिड़ला से मुलाकात कराई जिन्होंने नौकरी का प्रस्ताव दिया, लेकिन दो हफ्ते साथ रहने के बाद लोहिया ने निजी सचिव बनने से इनकार कर दिया। तब पिता जी के मित्र सेठ जमुनालाल बजाज लोहिया को गांधी जी के पास ले गए तथा उनसे कहा कि ये लड़का राजनीति करना चाहता है।

कुछ दिन तक जमुनालाल बजाज के साथ रहने के बाद शादी का प्रस्ताव मिलने पर शहर छोड़कर वापस कलकत्ता चले गए। विश्व राजनीति के आगामी 10 वर्ष विषय पर ढाका विश्वविद्यालय में व्याख्यान देकर कलकत्ता आने-जाने की राशि जुटाई। पटना में 17 मई 1934 को आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में देश के समाजवादी अंजुमन-ए-इस्लामिया हॉल में इकट्ठे हुए, जहां समाजवादी पार्टी की स्थापना का निर्णय लिया गया। यहां लोहिया ने समाजवादी आंदोलन की रूपरेखा प्रस्तुत की। पार्टी के उद्देश्यों में लोहिया ने पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य जोड़ने का संशोधन पेश किया, जिसे अस्वीकार कर दिया गया। 21-22 अक्टूबर 1934 को बम्बई के बर्लि स्थित श्रेडिमनी टेरेस में 150 समाजवादियों ने इकट्ठा होकर कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। लोहिया राष्ट्रीय कार्यकारणी के सदस्य चुने गए। कांग्रेस सोशलिस्ट सप्ताहिक मुखपत्र के सम्पादक बनाए गए।

गांधी जी के विरोध में जाकर उन्होंने कांसिल प्रवेश का विरोध किया। गांधी जी ने लोहिया के लेख पर दो पत्र लिखे। 1936 के मेरठ अधिवेशन में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के लिए पार्टी का दरवाजा खोल दिया। लोहिया बार-बार कम्युनिस्टों के प्रति सचेत रहने की चेतावनी जयप्रकाश नारायण जी एवं अन्य नेताओं को देते रहे। 1935 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जहां लोहिया को परराष्ट्र विभाग का मंत्री नियुक्त किया गया जिसके चलते

उन्हें इलाहाबाद आना पड़ा। 1938 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी में लोहिया राष्ट्रीय कार्यकारणी के सदस्य चुने गए। उन्होंने कांग्रेस के परराष्ट्र विभाग के मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 1940 में रामगढ़ कांग्रेस के कम्युनिस्टों को पार्टी से निकालने का निर्णय लिया गया। 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस में सुभाष चंद्र बोस को समाजवादियों ने समर्थन किया। डॉ. लोहिया तटस्थ बने रहे। लोहिया ने गांधी जी द्वारा यह कहे जाने पर की बोस का चुनाव मेरी शिकस्त है पर प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि यह प्रस्ताव गांधी जी से सम्मानपूर्वक आह्वान करता है कि उनकी शिकस्त नहीं हुई है। गांधी जी की इच्छानुसार सुभाषचंद्र बोस कार्यसमिति बनाने को तैयार नहीं हुए तथा नेहरू सहित अन्य कांग्रेस के नेताओं ने बोस के साथ कार्यसमिति में रहने से इंकार कर दिया तब बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया तथा कांग्रेस से नाता तोड़ लिया।

लोहिया ने महायुद्ध के समय युद्धभर्ती का विरोध, देशी रियासतों में आंदोलन, ब्रिटिश माल जहाजों से माल उतारने व लादने वाले मजदूरों का संगठन तथा युद्धकर्ज को मंजूर तथा अदा न करने, जैसे चार सूत्रीय मुद्दों को लेकर युद्ध विरोधी प्रचार शुरू कर दिया। 1939 के मई महीने में दक्षिण कलकत्ता की कांग्रेस कमेटी में युद्ध विरोधी भाषण करने पर उन्हें 24 मई को गिरफ्तार किया गया। कलकत्ता के चीफ प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट के सामने लोहिया ने स्वयं अपने मुकदमे की पैरवी और बहस की। 14 अगस्त को उन्हें रिहा कर दिया गया। 9 अक्टूबर 1939 को कांग्रेस समिति के बैठक वर्धा में हुई जिसमें लोहिया ने समझौते का विरोध किया। उसी समय उन्होंने शस्त्रों का नाश हो नामक प्रसिद्ध लेख लिखा। 11 मई 1940 को सुल्तानपुर के जिला सम्मेलन में लोहिया ने कांग्रेस से 'सत्याग्रह अभी नहीं' नामक लेख लिखा। गांधी जी ने मूल रूप में लोहिया द्वारा दिए गए चार सूत्रों को स्वीकार किया।

### गैर-कांग्रेसवाद के शिल्पी

देश में गैर-कांग्रेसवाद की अलख जगाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया चाहते थे कि दुनियाभर के सोशलिस्ट एकजुट होकर मजबूत मंच बनाए। लोहिया भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवाद के शिल्पी थे और उनके अथक प्रयासों का फल था कि 1967 में कई राज्यों में कांग्रेस की पराजय हुई, हालांकि केंद्र में कांग्रेस जैसे-तैसे सत्ता पर काबिज हो पायी। हालांकि लोहिया 1967 में ही चल बसे लेकिन उन्होंने गैर कांग्रेसवाद की जो विचारधारा चलायी उसी की वजह से आगे चलकर 1977 में पहली बार केंद्र में गैर कांग्रेसी सरकारी बनी। लोहिया मानते थे

कि अधिक समय तक सत्ता में रहकर कांग्रेस अधिनायकवादी हो गयी थी और वह उसके खिलाफ संघर्ष करते रहे।

### डॉ राम मनोहर लोहिया का लोकसभा सदस्य के रूप में

#### सशक्त लोक-तन्त्र के निर्माण के सदर्थ में

लोकतंत्र का अर्थ है जनता का तंत्र अर्थात् जनता का शासन। लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि देश की जनता शिक्षित हो। डॉ लोहिया सशक्त लोकतंत्र में विश्वास करते थे इसलिए शिक्षा को व्यापक स्तर पर जन सामान्य में उपलब्ध कराना चाहते थे। डॉ लोहिया जन सामान्य को उसकी लोक भाषा या मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करके जन-चेतना जाग्रत कर जनशक्ति का अभ्युदय करके सशक्त लोकतंत्र का निर्माण किया जा सके। डॉ लोहिया सम्पूर्ण विश्व में सशक्त लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते थे इसके लिए चैखम्भा योजना प्रस्तुत करके निचले स्तर से केन्द्र स्तर तक लोकतंत्र का सूत्रपात किया। कालान्तर में विश्व सरकार की स्थापना या विश्व लोकतंत्र की स्थापना हेतु पाँचवा खम्भा योजना प्रस्तुत की। इस प्रकार डॉ लोहिया सशक्त लोकतंत्र के प्रबल पक्षधर थे और उसे वह शिक्षा के द्वारा शक्तिशाली बनाना चाहते थे। वर्तमान समय में जहाँ-जहाँ शैक्षिक स्तर ऊँचा है वहाँ लोकतंत्र अधिक शक्तिशाली है। डॉ लोहिया की विचारधारा आज भी उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

#### विश्व नागरिकता के सन्दर्भ में

मनुष्य विश्व में जन्म लेते ही विश्व का सदस्य बन जाता है और उसके क्रियाकलापों से संसार में ख्याति या बदनामी का तमगा उसे प्राप्त होता है। इस प्रकार विश्व का सदस्य होने के नाते वह विश्व का नागरिक हो जाता है। विश्व का नागरिक होने के कारण विश्व के प्रति उसके कर्तव्य एवं अधिकार होते हैं। उन कर्तव्य एवं अधिकारों के निर्वहन करने के लिए मनुष्य का शिक्षित होना एक आवश्यक अर्हता होती है। डॉ राममनोहर लोहियासंसार में अलगाववाद, क्षेत्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद आदि समस्याओं के निराकरण के लिए विश्व नागरिकता का दृष्टिकोण पैदा करने के लिए शिक्षा का माध्यम सर्वोत्तम माना है। डॉ लोहिया का मानना था कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का मानसिक, बौद्धिक विकास करके मनुष्य के विचारों में संकीर्णता को मिटाकर व्यापकता पैदा करके विश्व नागरिकता का सपना साकार किया जा सकता है। विश्व नागरिकता भाव संसार में समरसता की भावना को जन्म देती है जिसे युद्ध, आतंक, कलह, क्षेत्रवाद आदि समस्यायें स्वतः समाप्त हो जाती हैं। आज का युग अलगाववाद और आतंकवाद का युग माना जा रहा है। जिसका समाधान विश्व

एकता की भावना जाग्रत करके ही किया जा सकता है। इस प्रकार डॉ लोहिया के विचार आज भी प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं।

#### जन सामान्य के आर्थिक स्तर के उन्नयन के सन्दर्भ में

किसी भी देश की प्रगति का आकलन वहाँ की जनसामान्य की आर्थिक स्तर के द्वारा की जाती है। देश के जन-सामान्य का आर्थिक स्तर जब तक समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता एवं अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित नहीं किया जाता है। जन सामान्य को आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक स्तर दोनों एक दूसरे के पूरक एवं पोषक है।

बिना शैक्षिक स्तर में वृद्धि किये आर्थिक स्तर की वृद्धि नहीं की जा सकती उसी प्रकार आर्थिक स्तर में वृद्धि किये उचित शैक्षिक स्तर को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। डॉ लोहिया के विचारों में आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक स्तर के उन्नयन का विचार महत्वपूर्ण है क्योंकि तभी समाज में समता एवं सम्पन्नता लायी जा सकती है देश एवं विश्व में एक खुशहाली लायी है। जो मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ साधन है। डॉ लोहिया देश के हर नागरिक को पढ़ा लिखा एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न देखना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने समता एवं सम्पन्नता का विचार किया है। डॉ लोहिया देश में आमदनी और खर्च में समानता रखना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने अनुपातिक आमदनी और खर्च का सिद्धान्त दिया था। अमीर और गरीब का अन्तर मिटाना चाहते थे। आज समाज में व्याप्त विसंगतियों को मिटाने के लिए लोहिया के विचारों की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता अति आवश्यक परिलक्षित होती है।

#### सप्त क्रांतियों के संदर्भ में

विश्व में कई बार सामाजिक परिवर्तन विभिन्न क्रांतियों के माध्यम से समय-समय पर होते रहे हैं जिनके द्वारा समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का सूत्रपात हुआ और समाज की गति एवं दिशा ही बदल गयी। क्रांतियों के जन्मदाता समय-समय पर समाज में जन्म लेते रहे हैं। इनमें एक डॉ राममनोहर लोहिया भी थे। डॉ लोहिया एक मर्मज्ञ शैक्षिक विचारक थे अपने सामाजिक निरीक्षण के दौरान उन्होंने जो अनुभव किया था कि मानव समाज में अनेक प्रकार की विषमतायें हैं परन्तु इतना अच्छा है कि इन अन्यायों का जनमानस द्वारा विरोध भी किया जाने लगा है तथा समानता पर आधारित समाज निर्माण धीरे-धीरे लोक आकांक्षा का विषय बनता जा रहा है। इसी आकांक्षा को समझकर उन्होंने भविष्य के लिए आदर्श समाज व्यवस्था की कल्पना की थी। समाजवादी अर्थव्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था, विश्व समाजवाद, नई विश्व

सभ्यता तथा आदर्श भारतीय समाज व्यवस्था के विचार उसी आदर्श समाज की कल्पना की देन है।

लोहिया जी ने उन सभी समस्याओं पर विचार किया था जो उनकी आदर्श समाज व्यवस्था की स्थापना के मार्ग में बाधायें बनी हुई हैं। इन्हीं समस्याओं को उन्होंने विषमता या अन्यायों की संज्ञा दी है। ये विषमतायें सात प्रकार की हैं रू जैसे कि आर्थिक विषमता, जातीय विषमता, लिंग भेद पर आधारित स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों की विषमता, विश्वव्यापी रंग भेद की नीति, राजसत्ता के भार से दबी हुई व्यक्ति स्वातन्त्र्य की समस्या तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध उपनिवेशों की समस्या विनाशकारी हथियारों की बाढ़ की समस्या। ये विषमताएं या समस्यायें सारे विश्व को प्रभावित कर रही हैं जिनका मूल कारण है शैक्षिक विषमता।

### राजनीतिक शुचिता के पक्षधर

लोहिया ही थे जो राजनीति की गंदी गली में भी शुद्ध आचरण की बात करते थे। वे एकमात्र ऐसे राजनेता थे जिन्होंने अपनी पार्टी की सरकार से खुलेआम त्यागपत्र की मांग की, क्योंकि उस सरकार के शासन में आंदोलनकारियों पर गोली चलाई गई थी। ध्यान रहे स्वाधीन भारत में किसी भी राज्य में यह पहली गैर कांग्रेसी सरकार थी- “हिंदुस्तान की राजनीति में तब सफाई और भलाई आएगी जब किसी पार्टी के खराब काम की निंदा उसी पार्टी के लोग करें।...और मैं यह याद दिला दूं कि मुझे यह कहने का हक है कि हम ही हिंदुस्तान में एक राजनीतिक पार्टी हैं जिन्होंने अपनी सरकार की भी निंदा की थी और सिर्फ निंदा ही नहीं की बल्कि एक मायने में उसको इतना तंग किया कि उसे हट जाना पड़ा।

### राष्ट्रीयकरण

उत्पादन के आवश्यक एवं उपलब्ध साधनों पर सामाजिक नियंत्रण की शृंखलाबद्ध नियमित प्रक्रिया से ही राष्ट्रीयकरण का अर्थ लगाया जाता है। आधुनिक युग में राष्ट्रीयकरण आवश्यक है। निजी क्षेत्र के दोष दूर करके समतापूर्ण समाज बनाने में इससे सहायता मिलती है। आधुनिक अभावग्रस्त समाज जहाँ-जहाँ विकेन्द्रीकरण पर आधारित समाजवादी लोकतन्त्र की आवश्यकता अनुभव कर रहा है, वहाँ इस पद्धति को अपनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। डॉ० लोहिया ने भी राष्ट्रीयकरण की नीति को अपनाने का सुझाव दिया था। वे मिली-जुली अर्थव्यवस्था के पक्ष में नहीं थे उनका कहना था कि श्भारतीय अर्थतंत्र में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के असह अस्तित्व से जाति की बुराइयों को बल मिलता है और सामाजिक जीवन भ्रष्ट हो जाता है। इसलिये धीरे-धीरे या एक-एक करके नहीं बल्कि राष्ट्रीयकरण एकदम और एक साथ होना चाहिये। अर्थव्यवस्था में दोनों क्षेत्रों

का सहअस्तित्व जैसी समस्यायें उत्पन्न करता है। राजकीय क्षेत्र में काम करने वाला व्यक्ति वहाँ से सम्पत्ति हथियाकर निजी क्षेत्र में ले जाता है क्योंकि वहाँ उसे सम्पत्ति रखने और बढ़ाने की स्वतंत्रता है। निजी क्षेत्र के सहअस्तित्व के कारण ही राजकीय क्षेत्र में करों की चोरी, देश में काले धन का प्रभाव, अधिक लाभ कमाने के लिए मूल्य वृद्धि तथा सामान में मिलावट आदि सम्भव हो जाता है। लोहिया जी का कहना था कि भारत में निजी व लोकतंत्र दोनों के साथ-साथ रखने का नतीजा हुआ कि सार्वजनिक सम्पत्ति में भी निजी सम्पत्ति के दोष शामिल हो गये। इस डॉ० लोहिया राष्ट्रीयकरण के द्वारा शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने तथा समान शिक्षा व्यवस्था लागू करना चाहते थे। जिससे देश के नागरिकों को शैक्षिक रूप से उन्नतिशील बनाने के अवसर समान रूपसे प्राप्त हो सकें।

### जाति प्रथा

समाजवाद सभी प्रकार की समानता पर निर्भर करता है। इधर जाति समाज में विषमता का निर्माण करती है। समता वाले समाज में जाति नहीं होनी चाहिए। वर्गविहीन समाज बनाने के लिए जाति तोड़ना जरूरी है। जाति की समाप्ति के लिए शुद्ध मानवीय आचरणों की आवश्यकता है, केवल विरोध करने या कहने सुनने मात्र से जाति समाप्त नहीं होगी। जाति प्रथा आदर्श समाज निर्माण तथा नई सभ्यता की स्थापना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है, इसलिए इसकी समाप्ति के लिए डॉ० लोहिया ने सर्वाधिक आग्रह किया था। जाति समाप्ति के लिए निम्न जातियों के लोगों को बराबरी पर लाना होगा। समान अवसर का सिद्धान्त इसके लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि निम्न एवं पिछड़े वर्ग में योग्यता कम होती है इसलिए वे बराबरी नहीं कर पावेंगे। इसका उपचार यह है कि इस वर्ग को अधिक एवं विशेष अवसर दिये जावें। विशेष अवसर देने पर ही ये पहले से विकसित वर्ग के समक्ष प्रतिस्पर्धा में टिक सकेंगे। यदि ऐसा न किया गया तो “प्रतिभावान या अपवाद स्वरूप योग्य लोग ही लड़ाई जीत सकेंगे।”

लोहिया जी निम्न जाति के लोगों के लिए सुरक्षित स्थानों की नीति में विश्वास नहीं करते थे। बराबरी में लाने के लिए इन्होंने कहा है कि नारी, हरिजन, शूद्र, गरीब, मुसलमान व ईसाई तथा आदिवासियों को हर जगह 60 प्रतिशत स्थान मिलना चाहिए।

जाति प्रथा समाप्त करने के लिए लोगों में अधिकार भावना जाग्रत करने की आवश्यकता है। अधिकार भावना में वृद्धि शैक्षिक भावना जाग्रत करने पर ही होगी।

## नारी वर्ग का उत्थान

लोहिया जी का विचार था कि नर नारी की विषमता को बिना समाप्त किये समाज में समानता का वातावरण नहीं बन सकता। उन्होंने कहा था कि "औरतों की जो स्वाभाविक गैर बराबरी है। उसको दूर करने का उपाय है कि उनको कुछ ज्यादा मौका दिया जाये। विशेष अवसर दिये बिना वे ऊँचे नहीं उठ सकतीं।" पुरुषों के समान लाने के लिये स्त्रियों को जीवन के हर क्षेत्र में प्राथमिक मिलना चाहिए तभी उनकी स्थिति सुधरेगी और उनकी क्षमता से समाज को लाभ मिलेगा। नारी वर्ग के उत्थान से देश को सामाजिक और आर्थिक दोनों ही प्रकार के लाभ हैं। स्त्रियों को पुरुषों के हर क्षेत्र में काम करने की स्वतन्त्रता होना चाहिये जिससे वे अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर सकें। उन्हें राजनीति में भाग लेने की स्वतंत्रता मिले।

## शांति एवं आतंकवाद के सन्दर्भ में

समाज में शांति एवं सुव्यवस्था किसी भी देश की प्रगति के लिए अति आवश्यक है किसी भी समाज का सर्वांगीण विकास उस देश में अमन चैन पर निर्भर करता है। शांति तभी स्थापित की जा सकती है जब वहाँ का समाज शिक्षित एवं बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक अभिक्षमताओं से परिपूर्ण हो। डॉ० राममनोहर लोहिया ने सदैव अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रखर विरोध करने का तरीका अपनाया था। वह समाज में सिद्धान्तों की स्थापना करके सभी को समाज में रहने, खाने-पीने, वेषभूषा धारण करने की स्वतंत्रता चाहते थे। इस प्रकार वह समाज में जियो और जीने दो के सिद्धान्त के अनुपालन किये जाने के प्रबल हिमायती थे। वह किसी को दुःखी नहीं देखना चाहते थे। शांति समाज में अमन-चैन की आधारशिला है, जब समाज में शांति होगी तो अराजकता एवं आतंकवादी गतिविधियाँ नहीं पनप सकेंगे। आतंकवाद एक प्रकार का बहुत ही समाज का विध्वंसक तत्व है जो समाज की जड़े हिला कर रख देता है और समाज की सारी गतिविधियों को पंगु बना देता है। समाज में डर व्याप्त हो जाता है। इस सन्दर्भ में डॉ० लोहिया के विचार अति उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

## राष्ट्रीय आजादी

दुनियाँ का बहुत बड़ा हिस्सा लम्बी अवधि तक साम्राज्यवादी देशों की दासता में रहा है। अभी भी कुछ भाग इस प्रकार से उनके शिकंजे में हैं। ये साम्राज्यवादी देश उपनिवेशों का बड़ी मात्रा में शोषण कर रहे हैं और अब तक इन्होंने किया है। इनके शोषण से ही देशों के मध्य आर्थिक विषमता बढ़ गई है। इस विषमता को मिटाकर आर्थिक समानता लाना ही समाजवाद का लक्ष्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपनिवेशवाद को समाप्त करके गुलाम

देशों को आजादी प्राप्त कराना बहुत अधिक जरूरी कार्य है। लोहिया जी का कहना था कि "राष्ट्रीय स्वतन्त्रता शायद हमेशा से मनुष्य की सबसे बड़ी कामना रही है - दुनियाँ की सभी कौमों कम से कम बड़ी कौमों आजाद हो जावेंगी - राष्ट्रीय स्वतन्त्रता जब मनुष्य की स्थायी सम्पत्ति बनने जा रही है - कोई कौम अब किसी दूसरी कौम पर सीधे हुकूमत नहीं कर सकेगी। अप्रत्यक्ष नियंत्रण या अन्याय अभी भी जारी रख सकते हैं और आगे उनका क्या होगा यह अन्याय के विरुद्ध समूचे संघर्ष के परिणाम पर निर्भर है।" डॉ० साहब ने स्वयं साम्राज्यवाद को तोड़ने के लिये 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम में कठिन लड़ाई लड़ी थी तथा आगे भी जहाँ कहीं भी लोगों ने आजादी के लिए लड़ाई लड़ी उसका उन्होंने हृदय से समर्थन किया क्योंकि वे जानते थे कि देश की आजादी समाजवाद के लिए एक आवश्यक शर्त है। उन्होंने इसलिए गोवा में भी इस पवित्र कार्य को किया।

लोहिया जी के अनुसार प्रमुख देशों की जमींदारी समाप्त होनी चाहिये, तभी उपनिवेशवाद हमेशा के लिए समाप्त होगा। "साम्राज्यवाद के सभी रूप जिन अंधेरे कोनों में छिपे हैं उनमें से निकालकर उन्हें जब तक खतम नहीं किया जायेगा तब तक दुनियाँ में समता या शान्ति नहीं आ सकती।" विश्व समाजवाद की स्थापना के लिये साम्राज्यवाद को उसके सभी रूपों को समाप्त करना होगा। इकसे लिए उपनिवेशों में जनता को संगठित होकर आजादी के लिए संघर्ष के मैदान में आ जाना चाहिये। आजाद देशों को भी नवउपनिवेशवाद के खतरों से अपने को बचाते रहना चाहिए।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. डॉ० राम मनोहर लोहिया का लोकसभा सदस्य के रूप में अध्ययन
2. शांति एवं आतंकवाद के सन्दर्भ में अध्ययन

## उपसंहार

लोहिया जी के शब्दों में, "अभिभावक का यह कर्तव्य नहीं है कि वह अपनी पुत्री की शादी करे। अच्छी शिक्षा और अच्छा स्वास्थ्य उपलब्ध करवाने के पश्चात् उसका उत्तरदायित्व समाप्त हो जाता है। समाज में अविवाहित माताओं को भी सहानुभूति मिलनी चाहिये। वेश्वावृत्ति पर कठोर प्रतिबन्ध होना चाहिये। लोहिया जी का यहाँ तक विचार था कि नारी को किस सीमा तक योनि स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिये। लोहिया जी के इस विचार पर टिप्पणी करते हुए एक समाजवादी लेखक का कहना था कि "कौमार्य की धारणा से मुक्त हुए बिना किसी पुरुष के प्रति समर्पित किये भी सुरक्षित पावे और

जब यह सुरक्षा उसे मिलती नहीं तब तक आर्थिक दृष्टि से बराबरी उसे मिल नहीं सकती।"[1] वर्तमान युग में भारतीय शिक्षादर्शन पर गांधीवाद का गहरा प्रभाव पड़ा है और उस वाद ने एक नई दिशा-प्रणाली को जन्म दिया है, जिसका नाम 'नई तालीम' है। क्या गांधीवाद इन वादों से भिन्न है या गांधीवाद का इन वादों पर किसी-न-किसी रूप में प्रभाव पड़ा-इसलिए गांधीवाद के पहलुओं पर विचार करना अनिवार्य हो जाता है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर अवधूत लोहिया शिवानी बुक्स, नई दिल्ली-2003
2. लक्ष्मी कान्त वर्मा डॉ० राममनोहर लोहिया सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ-1991
3. प्रो० सत्यमूर्ति महात्मा गांधी का शिक्षा-दर्शन अरूण प्रकाशन, दिल्ली-1999
4. रोमाँ-रोलाँ कृत महात्मा गांधी जीवन और दर्शन अनुवादक प्रफुल्ल चन्द ओझा 'मुक्त' लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1993
5. एच०के० कपिल अनुसंधान विधियाँ (व्यवहार परक विज्ञानों में) एच०पी० भार्गव बुक हाउस, आगरा-2007 डॉ० लोहिया का समाजवाद एवं अर्थदर्शन
6. डॉ० यतीन्द्र नाथ शर्मा
7. आशा कौशिक
8. पारसनाथ राय आराधना ब्रदर्स, कानपुर-2007 गांधी चिन्तन - तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रिन्टवैल, जयपुर 1995 अनुसंधान परिचय
9. लक्ष्मी नरायन अग्रवाल, 2007 इक्कीसवीं सदी में गांधी श्री अल्मोड़ा बुक डिपो, 9. डॉ० देवीदत्त पन्त डॉ० आर०ए० शर्मा
10. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार डॉ० राममनोहर लोहिया अनुवादक ओंकार शरद

### Corresponding Author

**Dr. Pooja Kiran\***

Lecturer (History), Govt. Girls Inter College, Kundarki, Moradabad